Received: Jul '25
Revised:
Accepted: Aug '25

© 2025 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

"बीकानेर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पिति पर प्रभाव का अध्ययन"

शोध निर्देषक :
डॉ. प्रीति ग्रोवर
(आचार्य)
टांटिया विश्वविद्यालय

शोधकर्ता :
प्रभा बिस्सा
टांटिया विश्वविद्यालय

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध में "बीकानेर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पिति पर प्रभाव का अध्ययन" किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के बीकानेर जिले के इस शोध कार्य हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत् 500 विद्यार्थियों को वर्गीकृत क्रम मे यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों को मापन हेतु डॉ. मंजू अग्रवाल एवं पारिवारिक संस्कारों मापने के लिए स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पिति पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

Keywords:- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, व्यक्तित्व गुण, पारिवारिक संस्कार एवं शैक्षिक निष्पिति ।

प्रस्तावना :–

भारत एक ऐसा प्राचीनतम देश है जिसके पास गौरवपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है। उसके पास वेदों, उपनिषदों सहित साहित्य का विशाल भण्डार है, जो ससार में प्राचीनतम कहा जाता है, भारतीय राष्ट्र ऐसे संगठन में संलग्न है जिसके नागरिक सहृदय, प्रतिबद्ध, सहभागी और उत्पादक हों तथा जो एक प्रबुद्ध, शक्तिशाली तथा समृद्ध देश का निर्माण कर सकें। समाज के भविष्य निर्माण में शिक्षा सदा से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है। इस महत्वपूर्ण कार्य को शिक्षा ने अत्यन्त प्रतियोगी सार्वभौमिक परिदृश्य के अन्तर्गत सम्पूर्ण व्यक्ति के विकास तया सामाजिक उत्थान व राष्ट्रीय विकास के काम से जोड़कर सम्पन्न करने का प्रयास किया है।

जिस प्रकार हमारे चारों तरफ कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है उसी प्रकार विद्यार्थी, विद्यालयों, पुस्तकालयों, समाज, प्रौद्योगिकी, मूल्य पद्धति, संस्कृति, अर्थव्यवस्था एवं राजनीति में भी परिवर्तन होता रहता है। धर्म, सत्ताधारी तथा प्रशासन आदि अभिधारणाओं में भी परिवर्तन होता रहता है, ऐसे परिदृश्य में अध्यापक तथा उसकी भूमिका स्थिर कैसे रह सकती है। उभरते हुए सार्वभौमिक समाज में अध्यापक की भूमिका निर्धारित करना आसान नहीं है। अध्यापक की भूमिका शिक्षा के लक्ष्यों तथा समाज की प्रमुख विचारधारा द्वारा निश्चित होती है। अतीत काल में शिक्षकों को द्विज के समान माना जाता था तथा समाज में राजा के पद को भी शिक्षक के पद से नीचे माना जाता था। इस विषय में एस. राधाकृष्णन का कथन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है ''एक सभ्य शिक्षक धन के अभाव में भी धनी होता है। इस सम्पत्ति को विचार बैंक में जमा नहीं किया जाना चाहिए, अपितु उस प्रेम भक्ति से जो अपने छात्रों में उत्पन्न की है, वह सम्राट जिसका साम्राज्य उसके शिष्यों को कृतज्ञ और मस्तिष्क में सीमा चिन्ह से अंधित है, जिसको संसार की कोई भी शक्ति नहीं हिला सकती है और न ही जिसे अणु बम हिला सकता है।'' इसी शिक्षक के ऊपर प्राथमिक शिक्षा का पूरा दारोमदार है। शिक्षक ही छात्रों का मानसिक, शारीरिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गुणों का विकास करता है। लेकिन यह तभी संभव होता है जब शिक्षक में उच्च चारित्रिक एवं मानवीय गुण हो एवं उसमें सामाजिक एवं सांसृतिक मूल्यों का प्रवाह हो। किन्तु इन सभी के होते हुए भी शिक्षक निष्प्रभावी होता है, जव वह अपने कार्य से संतुष्ट न हो या उसका शिक्षण प्रभावी न हो अथवा उसमें मूल्यों का अभाव हो। क्योंकि वर्तमान समय में समस्त मानवतावादी लक्ष्यों में कार्य संतुष्टि, शिक्षण प्रभाविता तथा मूल्यों को सर्वोपरि लक्ष्य माना जाता है, क्योंकि इसके प्राप्ति की कामना न सिर्फ शिक्षक ही करते हैं बल्कि प्रबन्धक एवं प्रशासक में भी यह समान रूप से परिलक्षित होती है।

यदि शिक्षक अपने कार्य सम्पादन से संतुष्ट हों तो वह परिश्रम, उत्साह एवं समर्पण भाव से कार्य करता है जिससे उसका शिक्षण प्रभावी होता है, जो सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के प्रति वरदान सिद्ध हो सकती है।

प्रस्तुत शोध का महत्व :–

राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति, उनके व्यक्तित्व गुणों और पारिवारिक संस्कारों के संबंध को समझना आज की बदलती शैक्षिक परिस्थितियों में अत्यंत आवश्यक हो गया है, क्योंकि शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञानार्जन भर नहीं रह गया है, बल्कि यह जीवन के बहुआयामी विकास से जुड़ा हुआ एक व्यापक और गहन क्षेत्र बन चुका है। किसी भी

विद्यार्थी की शैक्षिक निष्पत्ति उसके अध्ययन कौशल, मानसिक संतुलन, आत्मविश्वास, भावनात्मक परिपक्वता, सामाजिक व्यवहार और मूल्यबोध के सम्मिलित प्रभाव का परिणाम होती है। इसके बावजूद शैक्षिक निष्पत्ति में दिखाई देने वाली भारी विविधता यह संकेत देती है कि विद्यार्थियों की सफलता का निर्धारण केवल विद्यालय या शिक्षक की भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके भीतरी व्यक्तित्व और बाहरी पारिवारिक वातावरण की निर्णायक भूमिका भी इस प्रक्रिया में गहराई से शामिल रहती है। जब एक ही विद्यालय में, एक ही शिक्षक द्वारा, समान अवसर और समान शैक्षिक वातावरण प्रदान किए जाने के बाद भी विद्यार्थियों की उपलब्धियों में बड़ा अंतर दिखाई देता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्तित्व गुण और पारिवारिक संस्कार ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जिनकी उपेक्षा करके शैक्षिक विकास के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझा जा सकता।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए और भी बढ़ जाती है कि आज के समय में विद्यार्थियों पर प्रतियोगिता, चुनौतियों, अपेक्षाओं और सामाजिक दबाव का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया है। ऐसे वातावरण में व्यक्तित्व गुण जैसे आत्मनियंत्रण, धैर्य, सकारात्मक सोच, दृढ़ता, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति समर्पण विद्यार्थियों को अध्ययन में निरंतरता बनाए रखने तथा कठिनाइयों का सामना करने के योग्य बनाते हैं। यदि किसी विद्यार्थी में ये गुण पर्याप्त रूप से विकसित हों, तो वह सामान्य अवसरों में भी उच्च स्तर की उपलब्धि प्राप्त कर सकता है, जबकि इन गुणों की कमी उसे औसत या कमजोर प्रदर्शन की ओर ले जाती है। इस दृष्टि से यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि यह जाना जाए कि कौन–कौन से व्यक्तित्व गुण शैक्षिक निष्पत्ति को उन्नत बनाते हैं और उनका विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार, प्रेरणा और उपलब्धियों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है। शोध के माध्यम से यह समझना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि व्यक्तित्व के कौन–से पहलू जन्मजात होते हैं और कौन–से पारिवारिक वातावरण के कारण विकसित होते हैं, ताकि विद्यार्थियों को ऐसी परिस्थितियाँ प्रदान की जा सकें जो उनके व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाकर उनके शैक्षिक भविष्य को उज्ज्वल कर सकें।

इसी प्रकार पारिवारिक संस्कार भी विद्यार्थी के अध्ययन व्यवहार और उपलब्धियों के निर्माण में आधारभूत भूमिका निभाते हैं। परिवार ही वह प्रथम संस्था है जहाँ बच्चे को अनुशासन, समयबद्धता, सत्यनिष्ठा, सहयोग, जिम्मेदारी, सम्मान, मेहनत, सरलता और नैतिकता जैसे मूल्य मिलते हैं। विद्यालय इन मूल्यों को विकसित करने में सहायक भूमिका निभाता है, लेकिन मूल संस्कारों का बीजारोपण घर में ही होता है। यदि किसी घर का वातावरण शिक्षण–उन्मुख, अनुशासित, संवाद–सम्पन्न और प्रेरक हो तो बच्चे का मन अध्ययन के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है। वह चुनौतियों से डरता नहीं, कठिन विषयों को धैर्य से सीखता है और जीवन में सफलता प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प विकसित करता है। इसके विपरीत यदि पारिवारिक वातावरण अव्यवस्थित, तनावपूर्ण, दिशाहीन या शिक्षा–विरोधी हो, तो उसका प्रतिकूल प्रभाव बच्चे की अध्ययन आदतों, कार्यशीलता और मानसिक संतुलन पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। इसलिए यह अध्ययन पारिवारिक संस्कारों और शैक्षिक निष्पत्ति के बीच के संबंध को स्पष्ट करने के लिए अनिवार्य है ताकि यह समझा जा सके कि कौन–से पारिवारिक व्यवहार विद्यार्थियों की सफलता में सहायक हैं और कौन–से व्यवहार बाधक।

अध्ययन का महत्व इसलिए भी अत्यधिक बढ़ जाता है कि आज का समाज तेज़ी से बदल रहा है। जीवनशैली, पारिवारिक संरचना, आर्थिक अपेक्षाएँ, तकनीकी प्रभाव, मीडिया संस्कृति और सामाजिक दबाव विद्यार्थी के जीवन को पहले की तुलना में कहीं अधिक प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे परिदृश्य में यह जानना आवश्यक है कि आधुनिक परिवारों में संस्कारों के स्वरूप में क्या बदलाव आए हैं, ये बदलाव विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं, और इन परिस्थितियों में विद्यार्थियों को किस प्रकार के मूल्य और मार्गदर्शन की आवश्यकता है। विशेष रूप से यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी परिवेश के अंतर को भी स्पष्ट करता है, क्योंकि दोनों वातावरणों की परिस्थितियाँ, संसाधन, अपेक्षाएँ और संस्कारों के स्वरूप में स्पष्ट भिन्नता होती है। इस कारण से विद्यार्थियों की उपलब्धियों में भी भिन्नता दिखाई देती है। यदि इन अंतरों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाए, तो इससे शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने तथा विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी समर्थन प्रदान करने के नए मार्ग खुल सकते हैं।

विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति की असमानता का कारण केवल बौद्धिक क्षमता या संसाधनों की कमी नहीं होती, बल्कि यह उनके व्यक्तित्व की शक्ति और पारिवारिक संस्कारों की गुणवत्ता पर भी आधारित होती है। यही कारण है कि शिक्षक तथा विद्यालय प्रशासक कई बार यह महसूस करते हैं कि कुछ विद्यार्थी कम संसाधनों के बावजूद उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं, जबकि कुछ विद्यार्थी पर्याप्त सुविधा होते हुए भी अपेक्षित स्तर प्राप्त नहीं कर पाते। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा जगत इस शोध के माध्यम से यह समझ सके कि व्यक्तित्व और संस्कार शैक्षिक प्रगति में किस प्रकार कार्य करते हैं और किस तरीके से इन कारकों को सुदृढ़ किया जा सकता है।

शोध का महत्व इस कारण से भी गहरा है कि इसके निष्कर्ष शिक्षा योजनाओं, परामर्श सेवाओं, विद्यालयी क्रियाकलापों, शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों, माता–पिता जागरूकता अभियानों तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों में प्रत्यक्ष उपयोग किए जा सकेंगे। यदि यह ज्ञात हो जाए कि कौन–से व्यक्तित्व गुण शैक्षिक उपलब्धि

को बढ़ाते हैं, तो विद्यालय विद्यार्थियों के लिए विशेष कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रेरक गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। इसी प्रकार यदि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन–से पारिवारिक संस्कार विद्यार्थी को सफलता की ओर ले जाते हैं, तो माता–पिता को भी इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है। इससे विद्यार्थी मानसिक रूप से अधिक मजबूत, अध्ययन के प्रति अधिक समर्पित और भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित बन सकते हैं। इस प्रकार यह शोध केवल सैद्धांतिक महत्व का नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक रूप से विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास और उज्ज्वल भविष्य के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

यह विद्यार्थियों के जीवन में व्यक्तित्व और संस्कार दोनों को समान रूप से मूल्य प्रदान करता है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों का विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना और जीवनोपयोगी कौशलों का एकीकृत निर्माण है। यह शोध इन उद्देश्यों को समझने और पूरा करने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। इसलिए यह अध्ययन शिक्षा विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, नैतिक विज्ञान और परिवार अध्ययन सभी को एक साथ जोड़ता है, जो इसे बहुआयामी महत्व का शोध बनाता है।

समस्या कथन –

"बीकानेर जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पिति पर प्रभाव का अध्ययन"

अध्ययन में प्रस्तुत तकनीकी शब्दों की व्याख्या –

राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर

उच्च माध्यमिक प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा–11 के विद्यार्थियों को राजकीय उच्च माध्यमिक स्तरीय मानते हुए न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक प्रणाली के द्वारा स्वीकार किया गया है।

व्यक्तित्व गुण – व्यक्तित्व का अर्थ बहुत व्यापक है व्यक्तित्व दो प्रकार का होता है।

1. आंतरिक
2. बाह्य

प्रस्तुत अध्ययन में संपूर्ण व्यक्तित्व को समेटा गया है व्यक्तित्व की समस्त क्रियाओं से उसके व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं को जाना जा सकता है।

पारिवारिक संस्कार –

परिवार मानवोचित गुणों की प्राथमिक पाठशाला भी है क्योंकि परिवार से प्राप्त संस्कारों ही बालक के सुदृ दृढ़ चरित्र का निर्माण करते हैं। बालक के आचार व्यवहार को देखकर हम उसके परिवार से प्राप्त संस्कार को आसानी से ज्ञात कर सकते हैं। संस्कारों से अपने आचार विचार में संशोधन एवं परिष्कार होता है। संस्कार मानव जीवन को परिमार्जित परिष्कृत और सुव्यवस्थित रखने का एक उपक्रम है। घर के शैक्षिक वातावरण से प्राप्त संस्कारों का प्रकटीकरण कक्ष में होता रहता है। क्योंकि बालक अपने पारिवारिक वातावरण का दर्पण होता है।

शैक्षिक निष्पत्ति – निष्पत्ति का आशय है कि छात्र द्वारा विभिन्न विषयों में प्राप्त परिपूर्णता का स्तर। शैक्षिक निष्पत्ति का आशय विद्यार्थियों के कक्षा–10 में प्राप्त परीक्षा परिणाम से है शोधार्थी का शैक्षिक निष्पत्ति से आशय है कि न्यादर्श हेतु चयनित छात्र अथवा छात्रा विद्यालय में कितने प्रतिशत अंक प्राप्त करता है।

अध्ययन के उद्देष्य :–

(1) राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(2) राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकपनाएँ :–

(1) राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक संबंध नहीं पड़ता।

(2) राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक संबंध नहीं पड़ता।

न्यादर्ष :–प्रस्तुत शोध में प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के बीकानेर जिले के इस शोध कार्य हेतु चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत् 500 विद्यार्थियों को वर्गीकृत क्रम मे यादृच्छिक विधि के अन्तर्गत लाटरी विधि से चयनित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

5. व्यक्तित्व गुण मापनी (डॉ. मंजू अग्रवाल)
6. पारिवारिक संस्कार मापनी (स्वनिर्मित)

प्रदत्तों का विष्लेषण व विवेचन –

(1) राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक संबंध नहीं पड़ता।

सारणी संख्या – 1

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	सहसम्बन्ध	सार्थकता का स्तर
राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुण	500	143.64	12.428	0.041	स्वीकृत
राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति	500	72.65	10.257		

व्याख्या :– परिकल्पना संख्या 1 के राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्धित दत्तों को विश्लेषित किया गया है। राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति के प्रदत्तों के मध्यमान व मानक विचलन के आधार पर सहसम्बन्ध गुणांक त–का प्राप्त मान सार्थकता के स्तर 0.01व 0.05 पर सारणी मान से कम है। अतः इस आधार पर शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है तथा परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति एक दूसरे से प्रभावित नहीं होते है तथा दोनो सहसम्बन्धित नहीं है अर्थात् राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक संबंध नहीं पड़ता।

(2) राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक संबंध नहीं पड़ता।

सारणी संख्या – 2

चर	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	सहसम्बन्ध	सार्थकता का स्तर
राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कार	500	76.37	11.56	0.055	स्वीकृत
राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति	500	72.65	10.257		

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति से सम्बन्धित प्रदत्तों के मध्यमान व मानक विचलन के आधार पर सहसम्बन्ध गुणांक त– का प्राप्त मान सार्थकता के स्तर 0.01 व 0.05 पर सारणी मान से कम है। अतः इस आधार पर शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है तथा परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति एक दूसरे से प्रभावित नहीं होते है तथा दोनो सहसम्बन्धित नहीं है। अर्थात् राजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर कोई सार्थक संबंध नहीं पड़ता।

शैक्षिक सुझाव–

1. विद्यालय में आयोजित होने वाली सांस्कृतिक, साहित्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए ताकि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके। ताकि विद्यार्थियों को सीखने के अवसर प्राप्त हो।
2 विद्यार्थियों को शिक्षा संबंधित समस्याओं से अध्यापकों व अभिभावकों को अवगत कराना चाहिए ताकि उसका समाधान किया जा सके।
3. विद्यार्थियों को चाहिए कि वह कक्षा में स्वयं विनियमित शिक्षार्थी बनने का प्रयास करें क्योंकि स्वयं भी नियमित शिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि छात्र सीखने के दृष्टिकोण में सक्रिय है।
4. बालक को शुरू से ही अच्छे संस्कारों को अपनाकर आगे बढ़ना चाहिए जिससे वरिष्ठ नागरिक बन सके। संस्कारों का निर्माण होने के बालक में सहयोग और

सहानुभूति, सेवा, नैतिकता यह सभी सामाजिक गुण आ जाते हैं।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन का कार्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं पर किया गया है। इस प्रकार का शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, स्नातक स्तर तथा परास्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं पर भी किया जा सकता है।
2. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनकी बु(पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों पर किया गया है। इसको अन्य वर्ग शिक्षक, अभिभावकों आदि पर भी किया जा सकता है।
4. अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
5. अनुसूचित जाति व सामान्य जाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक संस्कारों का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
6. वंचित बालकों व सामान्य बालकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. कौर किरणदीप और संधु "विद्यार्थियों के पारिवारिक लगाव, पालन–पोषण प्रणाली का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन"।
2. कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
3. गुप्ता, मधु 2005, परिवार की प्रकृति, गृह वातावरण और माता पिता की सहभागिता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, परिप्रेक्षय, वर्ष–12, अंक–2, अगस्त 2005, पेज नं. 103–114।
4. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
5. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेष मारवाह (2005) '' षिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' षिक्षा प्रकाषन जयपुर पृष्ठ संख्या (407–430)
6. पाण्डेय लक्ष्मी नारायण 2010 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन, मूल्यों एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन' पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य आई. एएसई मान्य विश्वविद्यालय सरदार शहर
7. सिंह, रामपाल और शर्मा, ओ.पी. (2008), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।
8. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
9. श्रीवास्तव, डी.एन. और वर्मा, प्रीति (2007) शिक्षा अनुसंधान में सांख्यिकी विधियाँ आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.